

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह की पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना: 'निर्बल सेवक' के विशेष संदर्भ में

Mrs. Rinki Agarwal

Assistant Professor, Government Degree College Goverdhan Mathura

सारांश(Abtract)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में पत्रकारिता ने जनमत निर्माण, राजनीतिक चेतना के प्रसार और औपनिवेशिक शासन की आलोचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने भारतीय समाज को केवल राजनीतिक घटनाओं की जानकारी ही नहीं दी, बल्कि स्वतंत्रता, स्वाभिमान, सामाजिक समानता और राष्ट्रीय एकता जैसे विचारों को भी व्यापक सामाजिक विमर्श का हिस्सा बनाया। उस समय संचार के साधन सीमित थे और देश की अधिकांश जनता तक राजनीतिक विचारों की पहुँच आसान नहीं थी। राजा महेन्द्र प्रताप सिंह इसी परंपरा के ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने राजनीतिक सक्रियता, सामाजिक सुधार, शिक्षा और पत्रकारिता को एक-दूसरे से जोड़कर देखा।

राजा महेन्द्र प्रताप की पत्रकारिता का अध्ययन विशेष रूप से उनके पत्र 'निर्बल सेवक' के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाता है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, समस्त विषयों पर विचार किया जाता था। उनके पत्रकारिता संबंधी प्रयासों का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध विचार निर्माण और भारतीय स्वतंत्रता की आकांक्षा को मजबूत करना भी था। प्रस्तुत शोध-पत्र में 'निर्बल सेवक' को राजा महेन्द्र प्रताप की राजनीतिक एवं सामाजिक विचारधारा को समझने के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि पत्रकारिता उनके लिए राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का किस प्रकार साधन बनी। साथ ही, स्वतंत्रता, स्वदेशी, सामाजिक समानता, औपनिवेशिक विरोध और व्यापक मानवीय दृष्टिकोण जैसे विचारों को उनके पत्रकारिता-चिंतन के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द(Keywords)- राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, निर्बल सेवक, राष्ट्रवादी पत्रकारिता, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन, स्वदेशी, सामाजिक सुधार।

प्रस्तावना (introduction)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास केवल राजनीतिक संगठनों, आंदोलनों और नेताओं का इतिहास नहीं है। इसके समानांतर एक वैचारिक आंदोलन भी विकसित हो रहा था, जिसने भारतीय समाज में स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की नई समझ पैदा की। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं ने इस वैचारिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औपनिवेशिक शासन के समय प्रेस राजनीतिक विचारों के प्रसार का प्रभावशाली माध्यम बन गया था। भारतीय पत्रकारों और लेखकों ने समाचार-पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की तथा जनता के बीच राजनीतिक जागरूकता विकसित की। इसी वातावरण में राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने भी पत्रकारिता को अपने राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ा। राजा महेन्द्र प्रताप को सामान्यतः स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी, शिक्षाविद् और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्वतंत्रता के समर्थक के रूप में याद किया जाता है। किंतु उनके व्यक्तित्व का पत्रकार वाला पक्ष अपेक्षाकृत कम चर्चा में आता है। उनकी पत्रकारिता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि वे राजनीतिक विचारों को समाज तक पहुँचाने के लिए मुद्रित शब्द की शक्ति को किस प्रकार देखते थे। 'निर्बल सेवक' इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सामने आता है।

शोध-पद्धति (Research methodology)-प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक स्रोत - राजा महेन्द्र प्रताप की आत्मकथा, उनके पत्र, लेख और अन्य प्रकाशित सामग्री, समकालीन समाचार-पत्र, National Archives of India में उपलब्ध संबंधित दस्तावेज तथा द्वितीयक स्रोत- राजा महेन्द्र प्रताप पर प्रकाशित जीवनियाँ, स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास संबंधी पुस्तकें, शोध-पत्र एवं शोध-प्रबंध का सहारा लिया गया है।

परिकल्पना (hypothesis)- 'निर्बल सेवक' की वैचारिक दिशा राजा महेन्द्र प्रताप के व्यापक राष्ट्रवादी एवं सामाजिक चिंतन से संबंधित थी।

|अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical background of the study)

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। बंग-भंग, स्वदेशी आंदोलन, राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन और राजनीतिक संगठनों के विस्तार ने भारतीय समाज में नई राजनीतिक चेतना पैदा की। इस समय समाचार-पत्रों ने न केवल घटनाओं की जानकारी जनता तक पहुँचाई बल्कि उन घटनाओं की ऐसी व्याख्या प्रस्तुत की जिससे राजनीतिक विचारों का निर्माण हुआ। राष्ट्रवादी पत्रकारिता का मूल उद्देश्य ब्रिटिश शासन की नीतियों को उजागर करना और भारतीय समाज में राजनीतिक आत्मविश्वास पैदा करना था। राजा महेन्द्र प्रताप इसी ऐतिहासिक वातावरण में सक्रिय हुए। उनके राजनीतिक विचारों पर दादाभाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल आदि राष्ट्रवादी नेताओं के प्रभाव का उल्लेख मिलता है। इस पृष्ठभूमि में उनकी पत्रकारिता को उनके व्यापक राष्ट्रवादी चिंतन से अलग नहीं किया जा सकता।

राजा महेंद्र प्रताप का व्यक्तित्व और पत्रकारिता (Raja Mahendra Pratap's personality and Journalism)

1 दिसम्बर 1886 को उत्तर प्रदेश के हाथरस (वर्तमान, तत्कालीन अलीगढ़) जिला के मुरसान राज्य के जाट परिवार में राजा घनश्याम सिंह बहादुर के तीसरे पुत्र के रूप में जन्मे राजा महेंद्र प्रताप का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे शिक्षा के क्षेत्र में प्रेम महाविद्यालय से जुड़े, स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे और बाद में भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से विदेश यात्राएँ कीं। उनका पत्रकारिता संबंधी प्रयास भी इसी व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्य का हिस्सा था। राजा महेंद्र प्रताप सिंह पत्रकारिता के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करने वाले अकेले नहीं थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता को हथियार बनाने वाले कई और निडर पत्रकार थे, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी थी। मौलाना बरकतुल्लाह (ये राजा महेंद्र प्रताप सिंह के सबसे करीबी साथी थे। जब राजा साहब ने 1915 में काबुल में भारत की पहली अस्थायी सरकार बनाई, तो मौलाना बरकतुल्लाह उसके प्रधानमंत्री बने थे।), गणेश शंकर विद्यार्थी भी इस दौर के सबसे निडर पत्रकारों में से एक थे।, बाल गंगाधर तिलक (उन्होंने 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) अखबारों के जरिए जनता में राष्ट्रवाद की भावना भरी।), लाला लाजपत राय (उन्होंने लाहौर से 'वंदे मातरम' (उर्दू दैनिक) और 'द पीपल' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। वे अपने लेखों में अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों की धज्जियां उड़ाते थे।), बाबूराव विष्णु पराडकर (उन्होंने 'आज' अखबार के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को एक नई धार दी। उनके लेख क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा का काम करते थे।) इन सभी पत्रकारों और राजा महेंद्र प्रताप सिंह के बीच एक बात बिल्कुल समान थी—इन सभी ने प्रेस की आजादी और देश की मुक्ति के लिए भारी व्यक्तिगत नुकसान उठाए, लेकिन कभी भी अपनी कलम की धार को कम नहीं होने दिया।

राजा महेंद्र प्रताप की पत्रकारिता का वास्तविक महत्व इस बात में निहित है कि उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता को व्यापक सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में देखने का प्रयास किया। उनकी पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता थी—सत्ता के सामने सच बोलना। उन्होंने अपनी रियासत और धन-दौलत की परवाह न करते हुए, अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ लिखना जारी रखा। जब ब्रिटिश सरकार ने भारत में उनके अखबारों पर पाबंदियां लगाईं, तो उन्होंने विदेशों (जर्मनी, जापान, अफगानिस्तान) की धरती को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वहाँ से भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में संपादन और लेखन किया। उनकी दृष्टि में राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं था; उसमें आत्मसम्मान, स्वदेशी, सामाजिक समानता और मानवतावादी दृष्टि भी शामिल थी।

राजा महेंद्र प्रताप द्वारा सम्पादित समाचारपत्र – (Newspaper edited by Raja Mahendra Pratap)

- 'निर्बल सेवक' (साप्ताहिक, हिंदी और उर्दू में, देहरादून से प्रकाशित)

- सर्वेन्ट्स ऑफ पावरलेस (अंग्रेजी में, देहरादून से प्रकाशित)
- वर्ल्ड फेडरेशन (अंग्रेजी में, बर्लिन से 1929 में प्रकाशित)
- संसार संघ (हिंदी में, 1943 में ,वृन्दावन से प्रकाशित)
- प्रेम (हिंदी में, वृन्दावन से प्रकाशित)ⁱⁱ

‘प्रेम’ (हिंदी समाचार-पत्र): वृन्दावन से निकलने वाले इस पत्र का प्रकाशन राजा महेन्द्र प्रताप किया करते थे | पहले इसका प्रकाशन साप्ताहिक होता था किन्तु बाद में यह मासिक पत्रिका के रूप में परिवर्तित कर दी गई | इसमें राजा महेन्द्र प्रताप सिंह की गतिविधियाँ, सिद्धांतों, राजा महेन्द्र प्रताप के यात्रा वृत्तांत, देश विदेश की राजनीतिक परिस्थितियों का प्रकाशन किया जाता था| 15 अप्रैल, 1910 से प्रकाशित की गई यह पत्रिका दिसम्बर 1911 में प्रेम महाविद्यालय की मुख्य पत्रिका बन गई |ⁱⁱⁱ

‘वर्ल्ड फेडरेशन’ (World Federation Monthly): जब वे देश से बाहर (निर्वासन में) थे, तब उन्होंने 1929 में बर्लिन (जर्मनी) से इस अंतरराष्ट्रीय पत्रिका की शुरुआत की | इसके जरिए उन्होंने विश्व शांति और वैश्विक नागरिकता का संदेश दिया | इसी वैश्विक शांति पत्रकारिता के कारण उन्हें 1932 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था|^{iv}

‘निर्बल सेवक’: नाम और वैचारिक संकेत(**Nirbal Sevak and ideological indications**)

निर्बल सेवक’ राजा महेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा 1914 में देहरादून से प्रकाशित किया जाने वाला एक राष्ट्रवादी समाचार-पत्र (साप्ताहिक) था। देहरादून से प्रकाशित इस अखबार के माध्यम से उन्होंने समाज के शोषित और वंचित वर्ग की आवाज उठाई। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1919) के दौरान, इस समाचार-पत्र में जर्मनी के पक्ष में और ब्रिटिश राज के विरोध में कुछ लेख प्रकाशित किए गए थे। इन राष्ट्र-समर्थक और ब्रिटिश-विरोधी लेखों के कारण अंग्रेजी हुकूमत ने राजा महेन्द्र प्रताप पर 500 रुपये का जुर्माना लगाया था।^v राजा साहब ने यह जुर्माना भर दिया, लेकिन इसके बाद भारत को पूरी तरह स्वतंत्र कराने का उनका संकल्प और अधिक प्रबल हो गया, जिसके चलते उन्होंने आगे चलकर विदेश जाकर और 1 दिसम्बर १९१५ को काबुल में भारत की पहली अंतरिम सरकार की स्थापना की।^{vi} ‘निर्बल सेवक’ नाम अपने आप में विचारोत्तेजक है। ‘निर्बल’ शब्द समाज के उन वर्गों की ओर संकेत करता है जिनके पास राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक शक्ति कम थी, जबकि ‘सेवक’ शब्द सेवा और उत्तरदायित्व की भावना को व्यक्त करता है। इस नाम को राजा महेन्द्र प्रताप की व्यापक सामाजिक दृष्टि के संदर्भ में देखा जा सकता है। यह पत्रकारिता को सत्ता के निकट खड़े व्यक्ति की आवाज के रूप में नहीं, बल्कि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के पक्ष में खड़े होने वाले माध्यम के रूप में देखने की संभावना प्रस्तुत करता है। इसलिए ‘निर्बल सेवक’ का अध्ययन केवल समाचार-पत्र के इतिहास का अध्ययन नहीं है; यह उसके पीछे मौजूद सामाजिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास भी है। ‘निर्बल सेवक’ पत्र में राजा महेन्द्र प्रताप

ने 'गरीब का रोना' शीर्षक में तत्कालीन परिस्थितियों पर व्यंगात्मक रूप में लिखा है - "जमींदार काशतकारों की खाल उतारते हैं। इनके लहू को आम के रस की तरह चूसते हैं। साहूकार गरीब भाइयों पर छुरी चलाता है। दीन की पुकार कोई नहीं सुनता। इनका दुःख कोई नहीं हरता।"^{vii}

पत्रकारिता के मुख्य वैचारिक स्तंभ (Core Editorial Themes)-राजा साहब के लेखों में ब्रिटिश हुकूमत की क्रूरता को बेनकाब किया जाता था। वे भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के प्रबल हिमायती थे। वे रूढ़िवाद और जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। अपने लेखों में वे दलित सशक्तिकरण और आध्यात्मिक समानता की बात करते थे। उन्होंने हमेशा हिंदू-मुस्लिम एकता और 'प्रेम के धर्म' (Religion of Love) की वकालत की।

पत्रकारिता के आइने में महेंद्र प्रताप (Raja Mahendra Pratap through the Lens of Journalism)

राजा महेंद्र प्रताप ने पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना को केंद्रीय स्थान दिया है। राष्ट्रीय चेतना से आशय केवल अंग्रेजी शासन का विरोध करना नहीं है। इसके व्यापक अर्थ में—राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वतंत्रता की आकांक्षा, सामाजिक एकता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, अन्याय के विरुद्ध आवाज, भारतीय समाज में आत्मविश्वास जैसे तत्व भी शामिल थे। 'निर्बल सेवक' के संदर्भ में पत्रकारिता को इसी व्यापक प्रक्रिया का माध्यम माना जा सकता है। पत्रकारिता के माध्यम से विचारों को सीमित राजनीतिक सभाओं से बाहर निकालकर व्यापक समाज तक पहुँचाया जा सकता था। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति थी।

औपनिवेशिक शासन के लिए राष्ट्रवादी प्रेस चुनौती का विषय था। जब कोई समाचार-पत्र ब्रिटिश नीतियों की आलोचना करता था या ऐसी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं को भारतीय स्वतंत्रता के संदर्भ में प्रस्तुत करता था जो ब्रिटिश हितों के विरुद्ध जाती थीं, तो उस पर शासन की निगरानी रहती थी। राजा महेंद्र प्रताप के संदर्भ में उपलब्ध विवरण बताते हैं कि 'निर्बल सेवक' में जर्मनी के पक्ष में प्रकाशित एक लेख के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन पर ₹500 का जुर्माना लगाया था। इस घटना को केवल प्रेस संबंधी कार्रवाई मानना पर्याप्त नहीं होगा। यह इस बात का उदाहरण भी है कि प्रथम विश्वयुद्ध की अंतरराष्ट्रीय राजनीति और भारतीय स्वतंत्रता का प्रश्न आपस में जुड़ने लगा था। राजा महेंद्र प्रताप के लिए अंतरराष्ट्रीय राजनीति भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष का संभावित साधन बन रही थी।

राजा महेंद्र प्रताप की राजनीतिक यात्रा में पत्रकारिता और अंतरराष्ट्रीय सक्रियता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध दिखाई देता है। वे भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के उद्देश्य से विदेश गए। उनके प्रयास जर्मनी, तुर्की, अफगानिस्तान, रूस और जापान आदि देशों तक पहुँचे। इस दृष्टि से 'निर्बल सेवक' को उनके राजनीतिक जीवन की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। भारत की स्वतंत्रता उनके लिए केवल घरेलू राजनीतिक प्रश्न नहीं था। वे इसे अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक शक्ति-संतुलन से जोड़कर देखते थे। राजा महेंद्र प्रताप के राजनीतिक विचारों में स्वदेशी भावना का महत्वपूर्ण स्थान था। उनके व्यक्तित्व और कार्यों को स्वदेशी आंदोलन की व्यापक पृष्ठभूमि से

जोड़कर देखा गया है। स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं था। इसके व्यापक अर्थ में भारतीय समाज की आर्थिक और मानसिक आत्मनिर्भरता शामिल थी। पत्रकारिता इस विचार को फैलाने का महत्वपूर्ण माध्यम थी। समाचार-पत्रों के माध्यम से लोगों को स्थानीय उत्पादन, राष्ट्रीय उद्योग, आर्थिक निर्भरता और विदेशी शासन के आर्थिक प्रभावों पर विचार करने का अवसर मिलता था। इस प्रकार पत्रकारिता राष्ट्रीय आर्थिक चेतना के निर्माण में भी योगदान करती थी।

राजा महेन्द्र प्रताप का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। उनके विचारों में सामाजिक समानता और मानवतावादी दृष्टिकोण के तत्व भी दिखाई देते हैं। उनके सामाजिक विचारों का उल्लेख करने वाले स्रोत उन्हें धार्मिक एकता और सामाजिक समानता से जोड़ते हैं। इस आधार पर 'निर्बल सेवक' का अध्ययन सामाजिक सुधार के संदर्भ में भी किया जाता है। राष्ट्रीय चेतना तभी व्यापक बन सकती है जब समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता और सहयोग की भावना विकसित हो। इसलिए राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार को राजा महेन्द्र प्रताप की विचारधारा में बहुतायत देखा जा सकता है।

राजा महेन्द्र प्रताप की शिक्षा-दृष्टि और पत्रकारिता के बीच भी एक वैचारिक संबंध स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने प्रेम महाविद्यालय की स्थापना के माध्यम से शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण से जोड़ा। दूसरी ओर पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने विचारों के प्रसार का प्रयास किया। इन दोनों गतिविधियों का साझा उद्देश्य था—व्यक्ति में चेतना → समाज में जागरूकता → राष्ट्र में परिवर्तन। इस दृष्टि से शिक्षा और पत्रकारिता उनके लिए दो अलग-अलग गतिविधियाँ नहीं थीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के परस्पर पूरक माध्यम थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रवादी पत्रकारिता का सबसे महत्वपूर्ण योगदान राजनीतिक भाषा का निर्माण था। 'स्वराज', 'स्वदेशी', 'राष्ट्रीयता', 'स्वाभिमान' और 'स्वतंत्रता' जैसे शब्द केवल राजनीतिक शब्द नहीं रह गए थे। वे सामान्य जनता की राजनीतिक कल्पना का हिस्सा बनने लगे। राजा महेन्द्र प्रताप की पत्रकारिता को भी इसी प्रक्रिया में रखा जा सकता है। उनकी पत्रकारिता का महत्व इस बात में था कि वह स्वतंत्रता को केवल नेताओं की राजनीतिक मांग के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत करने की दिशा में कार्य करती थी।

निष्कर्ष (Conclusion)

राजा महेन्द्र प्रताप के लिए पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं थी बल्कि वह राजनीतिक विचारों के प्रसार और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का उपकरण थी। 'निर्बल सेवक' के संदर्भ में उपलब्ध सामग्री यह संकेत देती है कि पत्र उनके व्यापक राष्ट्रवादी कार्यक्रम से जुड़ा हुआ था। ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रकाशित सामग्री के संदर्भ में उन पर लगाया गया आर्थिक दंड यह भी दिखाता है कि उनकी पत्रकारिता

औपनिवेशिक सत्ता के लिए संवेदनशील राजनीतिक क्षेत्र से जुड़ गई थी। उनकी पत्रकारिता को शिक्षा, स्वदेशी, सामाजिक सुधार और अंतरराष्ट्रीय स्वतंत्रता-प्रयासों के साथ जोड़कर देखने पर उनके विचारों की व्यापकता स्पष्ट होती है। उन्होंने प्रेस को कभी व्यावसायिक साधन नहीं बनने दिया, बल्कि उसे राष्ट्र-निर्माण, समाज सुधार और वैश्विक शांति का माध्यम बनाया। उनका लेखन आज के पत्रकारों के लिए भी निर्भीकता और नैतिक मूल्यों की एक महान मिसाल है।

1. होम पोलिटिकल डिपार्टमेंट्स, फाइल नं. 28/08/39, "माई पासपोर्ट "नेशनल आर्काइव्स ऑफ़ इंडिया, न्यू दहली।
2. राजगोपाल सिंह वर्मा - राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, पृ0-1
3. डॉ. नत्थन सिंह - राजा महेन्द्र प्रताप एक बहुआयामी व्यक्तित्व, 1986, पृ0-71
4. रणवीर सिंह - एक व्यक्तित्व राजा महेन्द्र प्रताप, notion press platform, पृ0-16
5. राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, माई लाइफ स्टोरी ऑफ़ फिफ्टी फाइव इयर्स, 1947, पृ0-35
6. रणवीर सिंह - एक व्यक्तित्व राजा महेन्द्र प्रताप, notion press platform, पृ0-13
7. राजा महेन्द्र प्रताप प्राइवेट पेपर्स, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, न्यू दहली।